DEEBALI
WALL MAGAZINE
2022-2023 (I)

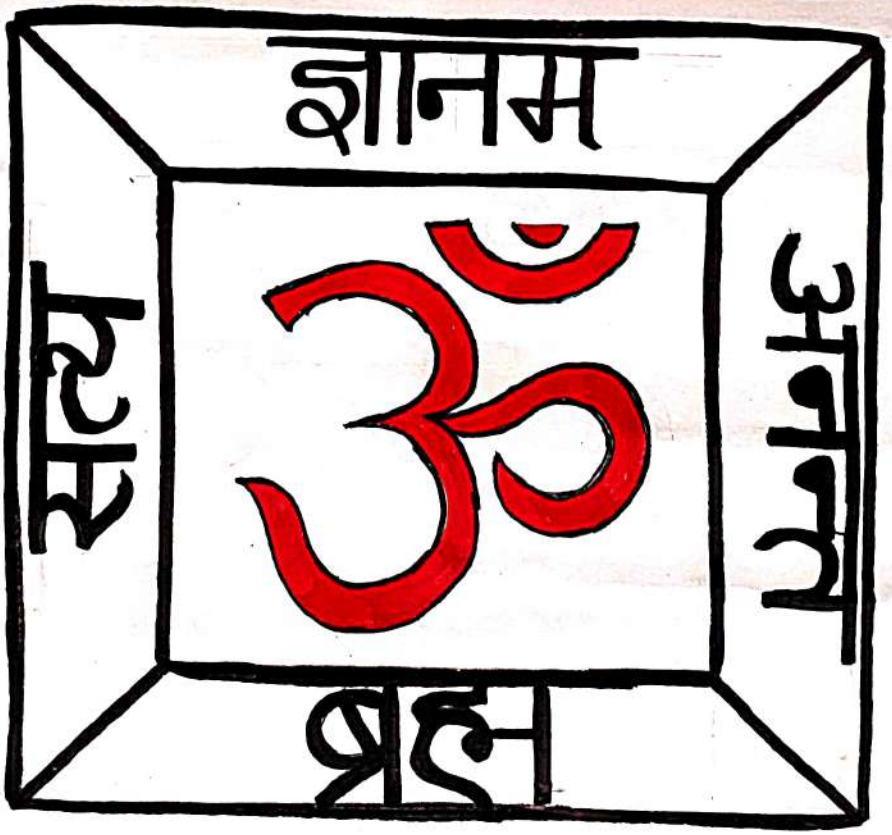

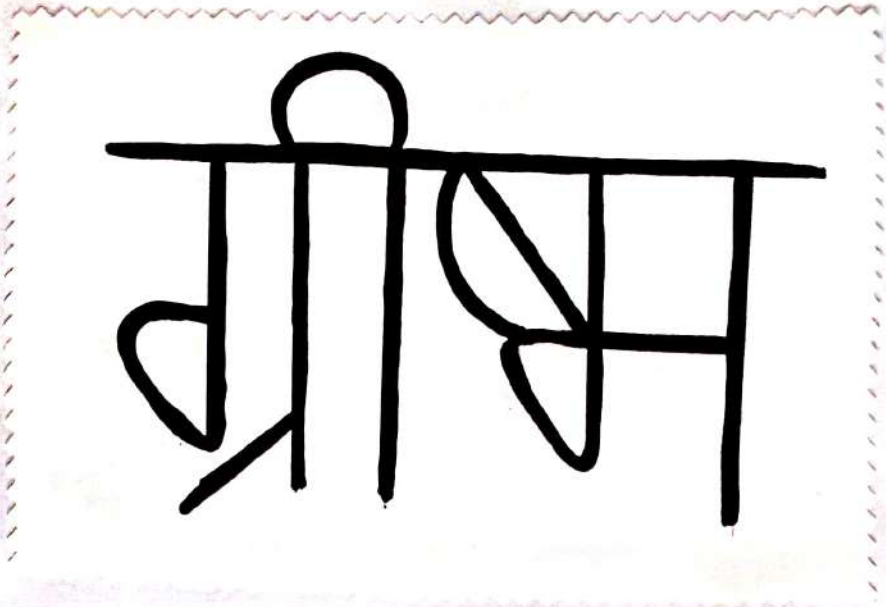
ग्रीष्म

की

तिथि

संपादकीय

"ग्रीष्म की तपिश"

प्रकृति ने हमें सब कुछ दिया है। ऋतुओं की बात करें तो सर्दी की रातें और ग्रीष्म की दोपहरी ये दो ऐसे अनुभव हैं जो क्षण भर में इंसान को ठिठुरा भी दे। और पसीने से तर बतर भी कर दे। ग्रीष्म ऋतु जो अपने नाम की तरह ही कड़क है और जिसकी तपिश से अच्छे पहाड़ तक पिघल जाया करते हैं, जिसके आने की खबर से लोग परेशान हो जाया करते हैं। असल मायने में इसे जीने का भी एक अलग ही मजा है।

ग्रीष्म शब्द सुनते ही मन में चिलचिलाती धूप, भीषण गर्मी और तेज हवाओं के साथ बहते लू का आभास होने लगता है। ग्रीष्म की आगमन ने तन मन को झुलसाया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे धूप तो मानो आग का गोला ही हो गया हो और ऐसे में मुँह में पिघलती बर्फ के गोले या ठंडी ठंडी शिकंजी के सेवन से कंठ से पूरे शरीर में ताजगी आ जाती है। ठंडक की लहर दौड़ जाती है और व्यक्ति तरोताजा महसूस करने लगता है। पर ग्रीष्म का मौसम है, बहुत ही प्यारा। बच्चे खुश रहते हैं जब विद्यालय में गर्मी की छुट्टियाँ मिलती हैं। बच्चों के लिए यह बौद्धिक सक्रियता का दौर बन जाता है और व्यक्तिगत विकास में बढ़ोतरी होती है।

इस पत्रिका के माध्यम से छात्र एवं छात्राओं को अवगत कराना है की जीवन के हर एक पल का आनंद उठाना चाहिए। छाँव हो या धूप, सब का आनंद लेना चाहिए। ग्रीष्म की तपिश को अपने मन की ठंडक से पिघला देना चाहिए। यही रवैया जीवन को सहज बनाता है।

अगला संस्करण
"कागज के फुल"

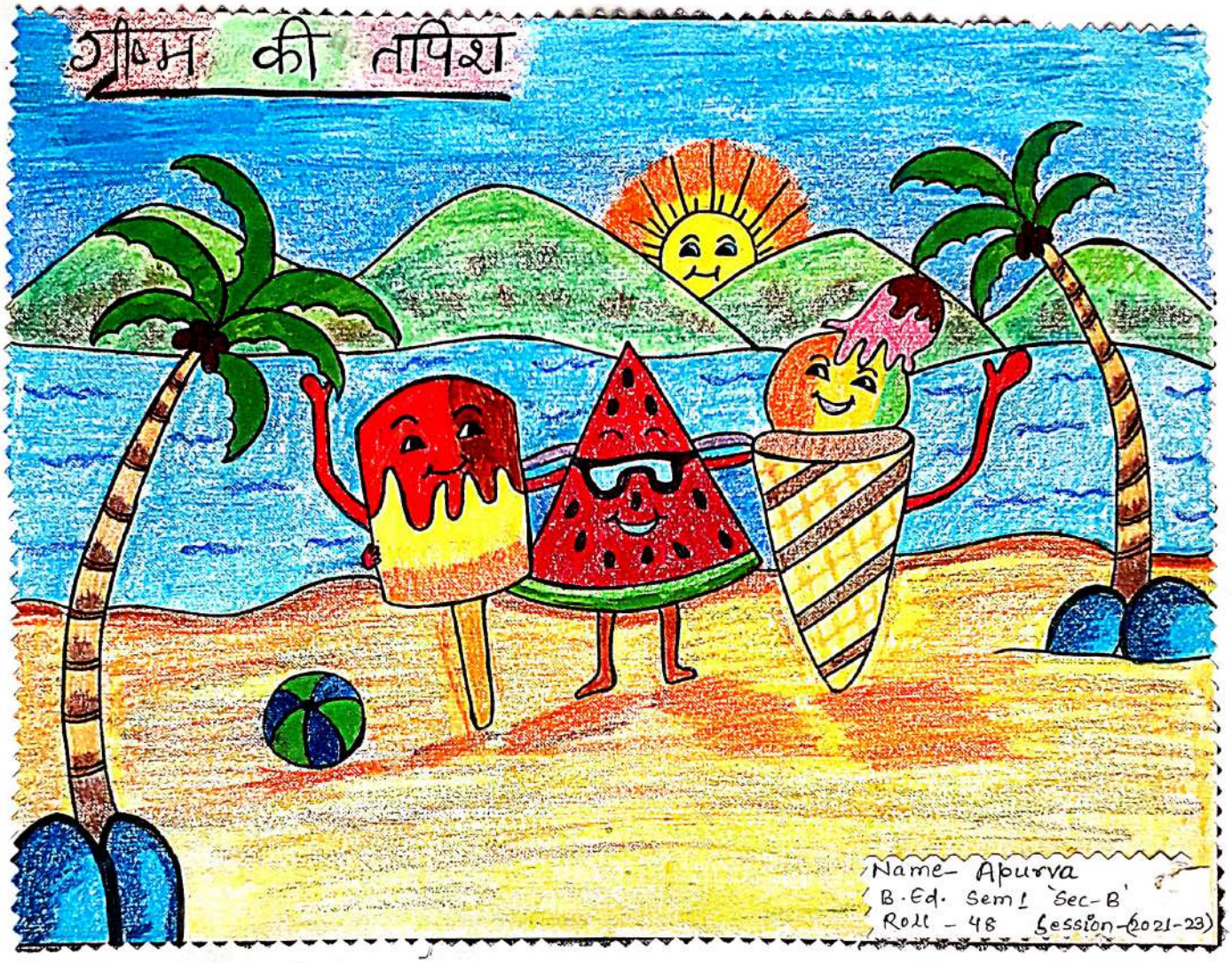

ग्रीष्म की तपिश
Name- Apurva
B.Ed. Sem I Sec-B
Roll - 48 Session-(2021-23)

ग्रीष्म की तपिश
नाम-रूपा कुमारी
रोल नं.-36 (B)
कक्षा-B.Ed (Sem I)
वर्ष-2024-202

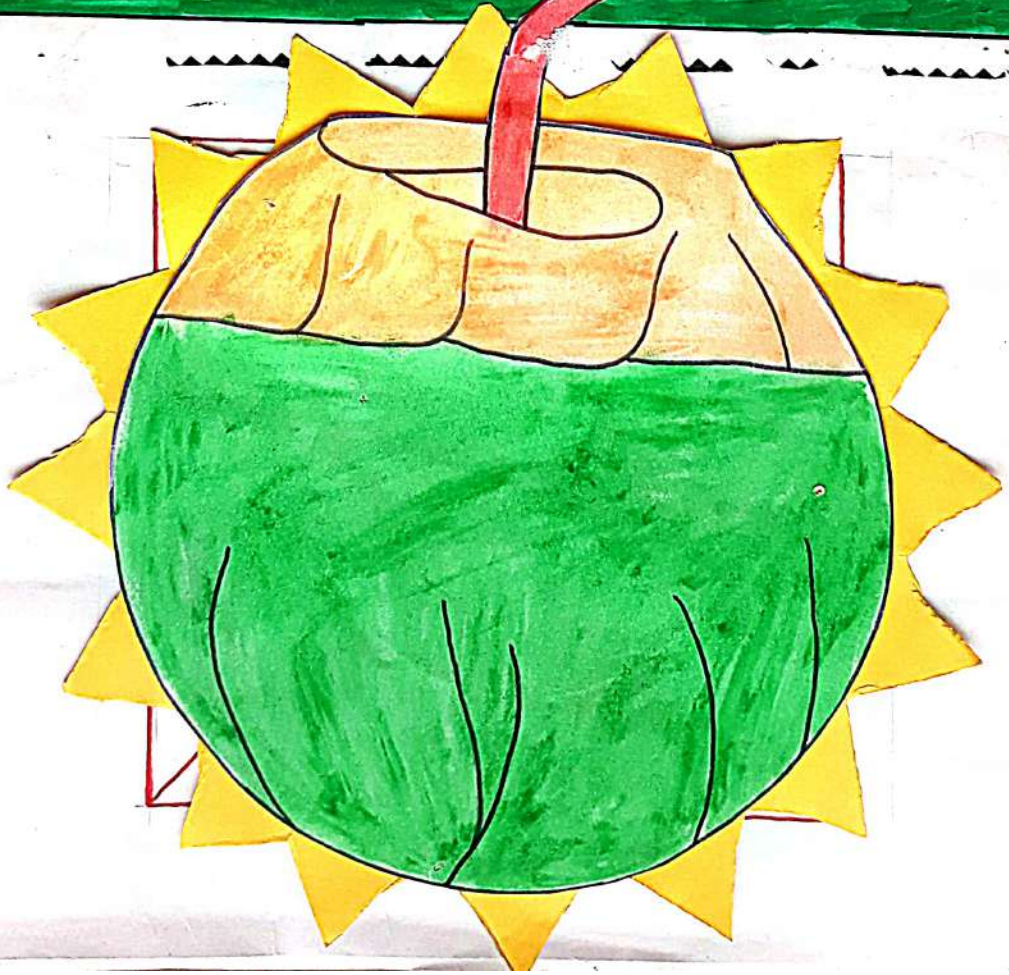

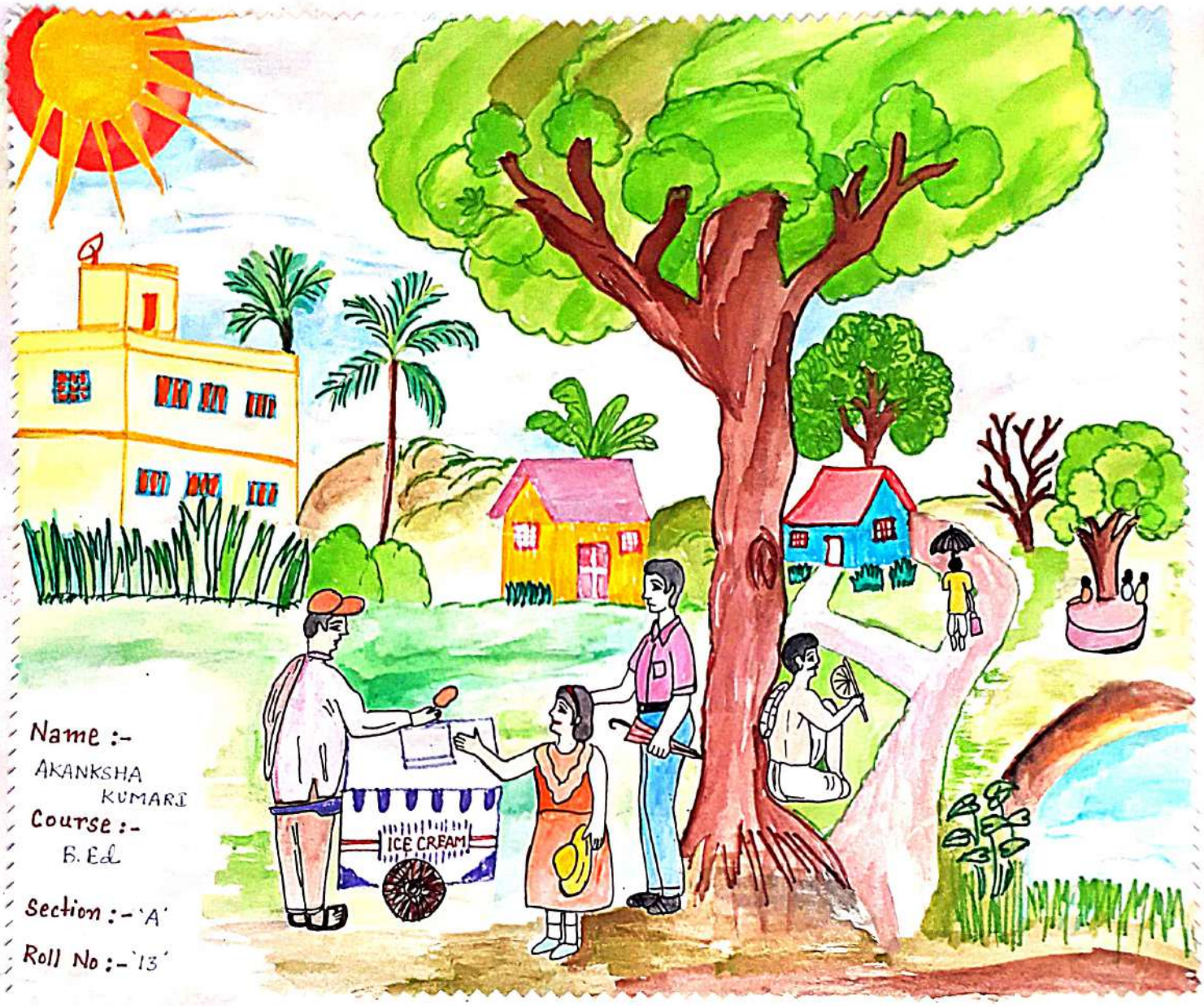

Name :-
AKANKSHA
KUMARI
Course :-
B. Ed
Section :- 'A'
Roll No :- '13'

Class - B.Ed Sem-I Name - KAJAL KUMARI

गर्मी की तपिश

गर्मी के दिन आते हैं,
हमको बहुत सताते हैं।
शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र जाएँ हम
तेज धूप में निकले हम
भली चौराहा है बहुत गरम
लू को आती नहीं शरम।
कहीं चैन न पाते हैं
मन ही मन झुँझलाते हैं।।

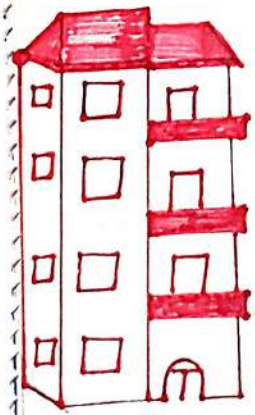

Name - Sunita Murmu
class - B.Ed, Sem-I
Roll No - 100
Sec - B'

ग्रीष्म की तपिश

यह मौसम बड़ा जलाता है।
जो ग्रीष्म ऋतु कहलाता है॥

चारो तरफ गरम उफान है।
यह तपता हुआ तुफान है॥

खेतो की सब फसले सुखी।
नदियो का भी नीर गया॥

दिन कटता ना, ना कटती राते।
यह सब तेरी माया है॥
ऐ ग्रीष्म ऋतु तु बोल जरा।
क्या तेरे मन मे आया है॥

बच्चों की अब ठाठ हुई।
गरमी की छुट्टी आयी है॥
"अब ना होगी पढाई,"
यह बात समझ आयी है॥

आइस्क्रीम, गोला और कोला का जमकर
लुफ्त उठाया है।
इन बच्चों ने गरमी का खूब महोल बनाया
है॥

सुनी गलिया और सड़के।
ये कैसे दिन आये है॥
सुरज दादा अब वर्षा भी करो।
इस गरमी ने बहुत सताया है॥

यह मौसम बड़ा जलाता है।
जो ग्रीष्म ऋतु कहलाता है॥

Name- Neha kumari
Roll No.- 139
B.Ed "C"

ग्रीष्म की तपिश

हुआ आगमन ग्रीष्म ऋतु का
आम्रमंजरी ने भी ली अंगड़ाई
नीम के वृक्ष ने निबौली बिखराई

सुबह सूर्योदय से पूर्व की शीतल
बयार सबके मन को अति भाई
दोपहर में गर्मी ने तपन बढ़ाई

खेतों में होने लगी फसलों की कटाई
नई पौध के लिए भी होने लगी रोपाई
धानी चुनरिया पहन धरती मुस्काई

किसानों के दिल में उमंग मस्ती छाई
ढोल गिद्धा भाँगड़ा नृत्य ने रौनक
लगाई।
खुशियाँ मिलके मनाओ बैशाखी है आई

नाम - खुशबू कुमारी
रोलन! - 12
सेक्सन - B

ग्रीष्म की तपिश

वसंत नव कुसुम शोभित
अनुपम सुगंध अलौकिक
सकल जगत आनंदित
ग्रीष्म की तपिश भानु तीक्ष्ण
हृदयाग्नि सम तपिश
तप्त तन वात उष्ण

वर्षा अमृत सम क्षण
तीव्र तृष्णा निष्क्रिय जग
कृष्ण-घनन माद विलक्षण
शरद वर्ण श्वेत धराधर
भ्रमर चिंत हरित पंकज
कुमुद मालती सम अधर

हैमंत दीपपर्व हर्षित जन
शीतल वात हृदय पुलकित
सेहत काल बलिष्ठ तन

—सुनिल प्रचंड 'नवाजिश'

नाम- नेहा कुमारी
रोल नं- 52 (B)
कक्षा - B.Ed SemI
वर्ष - 2021-2023

Greshm Ki tapish

PUJA KUMARI
B.Ed (Sem-I)
Section - 'B'
Roll no. - '06'

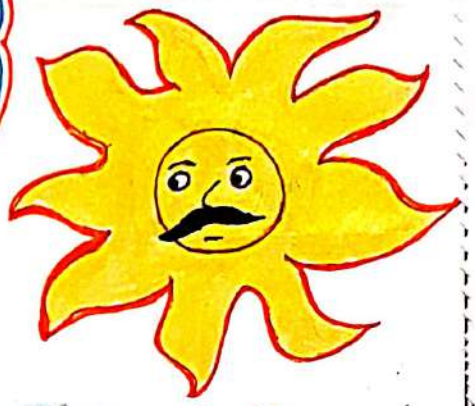

Dear Sun,
Please Go To Settings>
Display> Brightness!
And Reduce It... Too Hot
To Handle!!

I Have Not Changed Any Settings...
Please Go To your Settings And...

(1) Increase Number Of Trees
(2) Reduce Carbon Emissions Levels
(3) Reduce Concrete Jungles
(4) Increase Number of Lakes

Basically Switch To Human Mode
from Auto Mode...

ग्रीष्म की तपिश

ग्रीष्म की तपिश

झुलसी है धरती सारी
झुलसा सारा आसपां
ग्रीष्म की तपन में देख
झुलसा ये सारा जहां

आग के शोले बरस रहे
बूंद-बूंद लोग तरस रहे
धरती कैसी धधक रही
शोलों सा ये दहक रही।

गर्मी की कविता

गर्मी आई गर्मी आई
तपती जलती गर्मी आई ।।
हुई मुश्किल बाहर निकलना
सूरज आग बरसाए ।।
पंखे कूलर ए० सी चलते
थकते नहीं हैं भाई ।।
जून का महीना जो आया
पसीना टपका जाए ।।
ठण्डा पानी पी - पीकर सबकी
भूख मर गई भाई ।।
नदी तालाब सूख रहे
पंछी प्यासा भटका जाए ।।
कहीं साँप उसे दिखे तो
ले लेता वह अँगड़ाई ।।
कुल्फी वाला जब आता
चेहरे खिल - खिल जाए ।।
हम सबके दिल पे कुल्फी
रानी बन के छाई ।।
गर्मी आई गर्मी आई
तपती जलती गर्मी आई ।।

Shanti Saloni marandi
Sec - 'B'
Roll no - 32

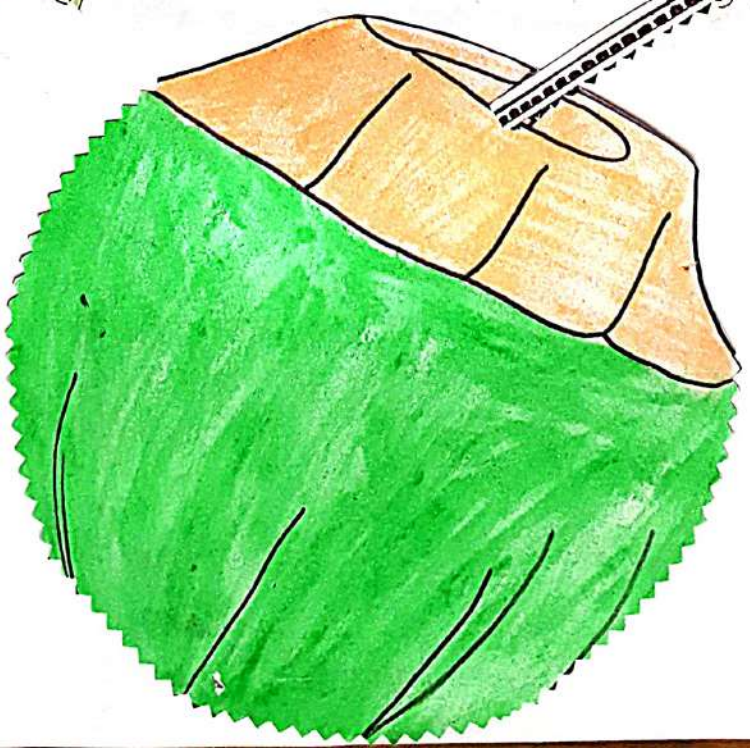

NAME- PINKY KUMARI

B.Ed Sem-I ROLL NO.- 77 Sec-'A'

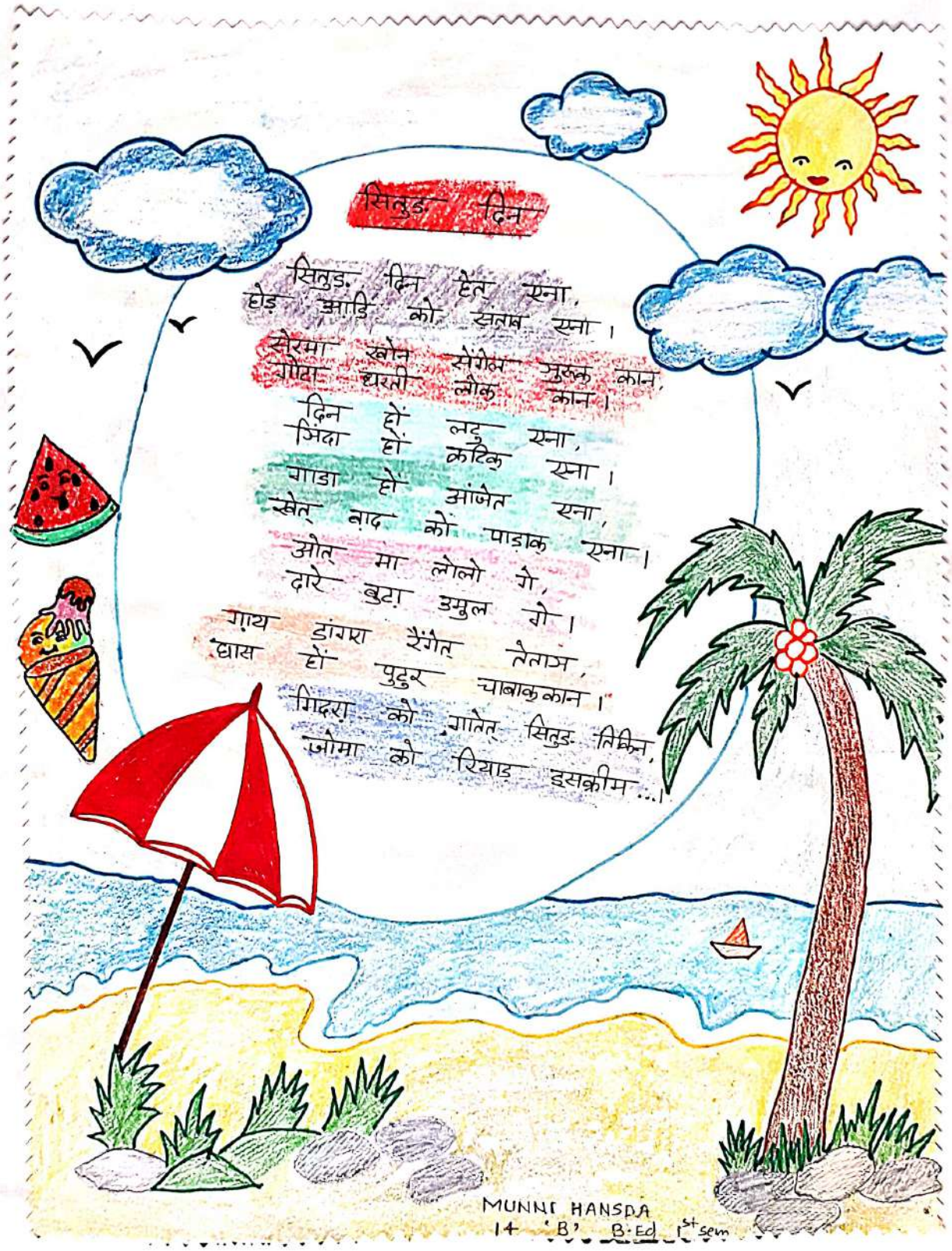

सितुङ दिन
सितुङ दिन हेत् एना,
होड़ आड़ि को संताब एना।
सेरमा खोन सेंगेल सुरूक कान,
गोटा धरती लोक कान।
दिन हों लटु एना,
सिंदा हों कटिक् एना।
गाडा हों आंजेत एना,
खेत् नाद को पाड़ाक एना।
ओत् मा लोलो गे,
दारे बुटा उमुल गे।
गाय डांगरा रैंगेत् तेतास,
घास हों पुटुर चाबाक कान।
गिदरा को गातेत् सितुङ तिकिन,
जोमा को रियाड़ इसक्रीम...।
MUNNI HANSDA
14 'B' B.Ed 1st sem

ग्रीष्म की तपिश

गर्मी का मौसम है आया
सबको इसने बहोत सताया।
आसमान से आग है बरसे
सूरज ने फैलाई साया।
कूलर पंखे A.C चलते
दिन भी न अब जल्दी ढलते।
पल भर में चक्कर आ जाते
थोड़ी दूर जो पैदल चलते।

जून का है जो चढ़ा महीना
टप टप टप टप बहे पसीना।
कुल्फी वाला जब आता है
हर बच्चा शोर मचाता है।
खाते हैं सब छोटे बच्चे
दिल को ठंडक पहुंचाता है।
न जाने ये है कहाँ से आया
इसने तो सबको न भुलाया।

Name- Suhagini Tudu
Class - B.Ed, Sem-I, Roll No

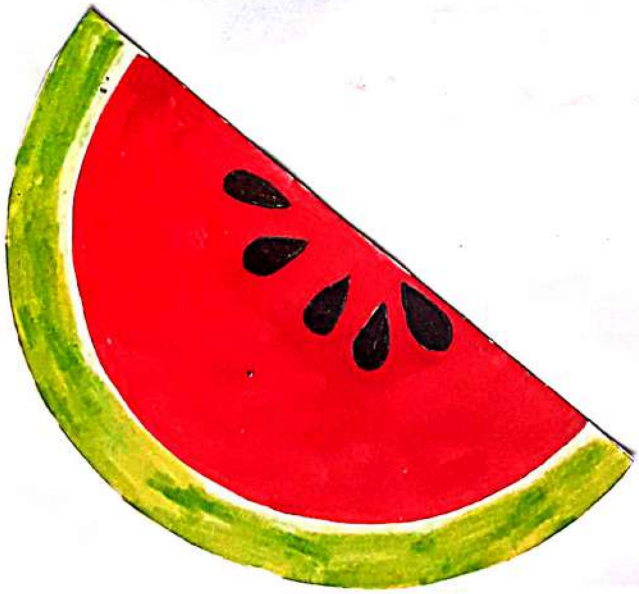

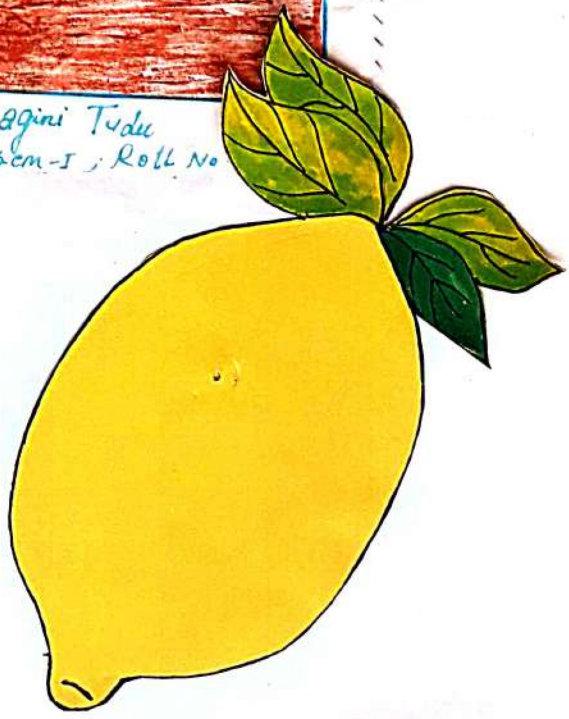

ग्रीष्म की तपिश

ग्रीष्म ऋतू की बात निराली
बहे पसीना आए बदहाली
कड़क धूप मे सब मुरझाए
बर्फ के गोलो से अगन मिटाए

छुट्टियों का मौसम है ये प्यारा
खेलते हम हर खेल निराला
रात कटती बिजली की राह देख
दिन मे लेते ठंडी बर्फ की सेंक

फलों का राजा आम खाते हैं
हम दिन भर बदन चुराते हैं
सांझ को ठंडी हवा की खोज में
निकलते हैं सैर सपाटे की मौज में

लीची, आम, तरबूज से अक्सर
मिटाते हैं गर्मी का तेज असर
लस्सी, छांछ पीकर गर्मी को
ठंडी करते अपने बदन को

सुकून पड़ता है मन को तब
बारिश होती धूप के बाद जब
मिट्टी की सौंधी खुशबू में हम
भूल जाते हैं ग्रीष्म के गम